Ist paper
B.A. III

भारत के प्राक्-इतिहास

Histrography of Pre-History of India.

"किसी भी देश का इतिहास और संस्कृति उसकी भौगोलिक परिस्थिति और भौगर्भिक संरचना के अनुरूप हुआ करती है।" चूंकि प्रागैतिहासिक मानव और उसकी जीवन-पद्धति पूर्णतः प्रकृति पर आश्रित हुआ करती थी। नृतत्त्वशास्त्र की भी मान्यता है कि मानव की उत्पत्ति भौतिक-रासायनिक संयोग के साथ-साथ भौगोलिक परिवर्तन से ही सम्भव हो पाती है। भारत का प्राक्-इतिहास इस नृतात्त्विक और भौगर्भिक मान्यता का अपवाद नहीं है। अतः भारत के प्राक् इतिहास के अध्येता को भी भारत की भौगर्भिक और भौगोलिक स्वरूप का ज्ञान होना अति आवश्यक है।

भारत की भौगर्भिक संरचना :→

भारत एशिया महादेश की सबसे प्राचीन और नवीनतम भूमि का भौगर्भिक संयोग है। हिमालय के उद्गम और पूर्व भारतीय उपमहादेश प्राचीन गोंडवाना (आस्ट्रेलिया से लेकर दक्षिणी अफ्रीका) भूमि का मध्य भाग था। इसके उत्तर में छिछले और गहरे पानी का भाग था। इस समुद्र के मध्य में हिमालय के उद्गम से प्राचीन गोंडवाना भूमि के मध्य भाग के दोनों ओर समुद्र का निर्माण हुआ और भारत तीन खण्डों से बना।
① प्रायद्वीप भारत 2. अतिरिक्त प्रायद्वीप भारत 3. सिंधु-गंगा और ब्रह्मपुत्र का मैदान के नाम से पुकारा है।

भारतीय उपमहाद्वीप का प्रथम भौगर्भिक खंड प्रायद्वीपीय भारत का दूसरा नाम दक्कन है। यह भू-भाग विन्ध्य से दक्षिणी का भाग माना जाता है। किन्तु विन्ध्य के उत्तर गंगा और दक्षिण का पठारी भाग भी प्रायद्वीप का ही अंश है। दूसरा खण्ड हिमालय-क्षेत्र है जो सिंध से हिमालय तक फैला हुआ है। इन दोनों के बीच खण्डों के बीच तीसरा खण्ड है। विश्व का प्राचीनतम भू-भाग होने के कारण इस भू-भाग को प्राचीन वनस्पति, जीव और मानव का भी आदि स्थल होने का सौभाग्य प्राप्त है। अतः प्रागैतिहासिक दृष्टिकोण से यह भू-भाग अति महत्वपूर्ण है।

भारत में प्रागैतिहासिक मानव और उसकी संस्कृति का उद्गम →

नृतत्त्व और जीवशास्त्री के बीच मतभेद है कि सर्वप्रथम मानव या मानव-सम-प्राणी की उत्पत्ति कहाँ हुई। जी० टेलर का मानना है कि मध्य-पूर्व एशिया से ही

उच्च-पूर्व पाषाण काल के अध्ययन के सम्बन्ध में दो प्रकार के-
विचार प्रतिपादित किए गए हैं - प्रथम सिद्धान्त बी० सुब्बाराव
का है। इनके अनुसार "भारत में उच्चपूर्व पाषाण काल को
अफ्रीका के उत्तर पाषाण काल (Late palaeolithic Age)
की भांति अध्ययन करना चाहिए।" परन्तु बी० एन० मिश्रा-
तथा आर० के० वर्मा ने भारत के उच्च-पूर्व पाषाण काल के
अध्ययन के लिए कामिनेड और बर्किट द्वारा चलाये गए तरीकों
को ही उपयुक्त मानते हुए अनुसरण करने का सिद्धान्त दिया।
फलतः भारतीय उच्च-पूर्व पाषाण काल को "ब्लेड-ब्यूरिन
उद्योग" के नाम से विभूषित किया गया है।

उच्च-पूर्व पाषाण काल के हथियार -

औजार सर्वप्रथम एल० ए० कामिनेड और एम० सी० बर्किट ने
दक्षिण-पूर्व तट से प्राप्त किया था। कार्टराइट ने बम्बई के
रेणुवली से और जी० आर० शर्मा ने मध्य-प्रदेश के सोन-घाटी,
सिन्ध के सिंहावल, उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर और वाराणसी से
ब्लेड-ब्यूरिन प्राप्त किए गये। इस तरह भारत के विशाल
क्षेत्र से उच्चपूर्व पाषाण काल के हथियार - औजार होने से
स्पष्ट हो गया कि अफ्रीका और यूरोप की भांति भारत में
भी मध्य-पूर्व पाषाण काल के क्रमिक विकास ने उच्च-पूर्व-
पाषाण संस्कृति को जन्म दिया।

उच्चपूर्व पाषाण काल में हथियार-औजार
उद्योग में भी भारी वृद्धि और परिवर्तन के प्रमाण मिलते हैं।
बेलन घाटी में हड्डी के उपयोग हथियार के रूप में होने का संकेत
मिलता है। इस तरह उच्चपूर्व पाषाण काल में संस्कृति के
कई नये-लक्षण प्रकट होते दीख पड़ते हैं। बेलनघाटी से दो-
कार्बन14 तिथि की उपलब्धि हुई है, जिसके आधार पर माना
जाता है कि भारत में उच्चपूर्व पाषाण संस्कृति ईसा
से पूर्व 32,000 वर्ष से लेकर ई०पू० 10,000 वर्ष के बीच रही
होगी।

मध्य पाषाण युग (Middle Stone Age):→

भारत के मध्य पाषाणयुग की संस्कृति
का अध्ययन और अनुसंधान मुख्य रूप से स्वतंत्रता प्राप्ति
के बाद प्रागैतिहासिक पुरातत्व की उपलब्धि है। यूरोप और
अफ्रीका में पुरा और नवपाषाण काल के अन्तराल को भरने
के लिए फ्रांस की मिन्युक गुफा और हालैंड की पेरस गुफा
और अफ्रीका की अनेक जगहों से पाये जाये गए
लघुअश्म (Michroliths) को मध्य पाषाण काल की-

की संस्कृति का नामकरण किया गया। भारत में भी ब्रूसफूट महोदय ने पूर्व और नवपाषाणकाल के बीच अन्तराल का सिद्धान्त दिया। परन्तु जी० आर० शर्मा द्वारा बेलनघाटी से प्राप्त लघु पाषाण उपकरण के परीक्षण और टाटा फण्डामेण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट द्वारा "प्रागैतिहासिक संस्कृति" पर आयोजित अन्तराष्ट्रीय संगोष्ठी के फैसले के बाद यह तय हो पाया कि" भारत के मध्य पाषाणयुग की संस्कृति विकास के क्रम में उत्तर-पूर्व पाषाण संस्कृति से प्रस्फुटित हुई।

मध्यपाषाणकाल की पुरावशेष मुख्यतया समाधि-स्थल, पहाड़ की ढाल और गुफा तथा शिलाश्रय के बाहर और कहीं-कहीं अन्दर से मिलते हैं। अतः बाँस-बल्ली-से बनी झोपड़ी मध्य-पाषाणकालीन मानव की नयी ~~वास~~ व्यवस्था थी। जनसंख्या की वृद्धि के कारण विशाल भारतीय भूखण्ड में मानवों का फैलाव हो गया।

नवपाषाणयुग (Neolithic or New stone age)

:→ नवपाषाणयुग प्राक् इतिहास की पूर्णाहुति का काल माना जाता है। भारत का प्राक्-इतिहास इसका अपवाद नहीं था। भारत में भी नव-पाषाण काल कृषि-क्रान्ति की शुरुआती दौर और ग्रामीण-बस्तियों के उदय के काल के रूप में स्वीकार किया गया है।

इस युग के पाषाण हथियार-औजारों में लघुश्म (Microlith) का बनना जारी रहा और नये प्रकार के हथियार-औजार अस्तित्व में आने लगे। इन्हें घिसकर चिकना बनाया जाने लगा और इनमें मूठ और बेंत की व्यवस्था की जाने लगी। जानवरों की हड्डियों से मत्स्यभाले बंसी, हँसिया, सुई आदि नये औजार बनाये गए। इस तरह नये हथियार-औजार, उपज तकनीक और कृषि-शिल्प का विकास हुआ।

भारत में नवपाषाणयुगीन संस्कृतियों की खोज और अध्ययन पिछले तीन-चार दशक के पुरातात्विक सर्वेक्षण और उत्खनन का प्रतिफल माना जाता है। भारतीय गणतंत्र की स्थापना के बाद ही पुरातत्ववेत्ताओं ने कारगर कदम उठाया।

अतः उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट हो जाता है कि भारत में नवाश्म संस्कृति सभी जगह एक जैसी नहीं थी। विकास के लक्षण की दृष्टि से बलुचिस्तान और गंगाघाटी महत्वपूर्ण थी अपर इन

Scanned with CamScanner

चीनों के मार्ग से उत्तर भारतीय ताम्र पाषाण संस्कृति का उद्गम हुआ, जिसने भारतीय संस्कृति की पृष्ठभूमि तैयार की।